CHETANA
International Journal of Education
(CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286
शोध-पत्र

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received 08.01.2023 | Reviewed 14.02.2023 | Accepted 27.02.2023

वागड का त्रिपुरा सुन्दरी मंदिर : एक अध्ययन

* वासुदेव बलाई
* * डॉ चन्द्रशेखर शर्मा

मुख्य शब्द - *स्कूल इंटर्नशिप, दो वर्षीय बी.एड., प्रशिक्षु- शिक्षक (इंटर्न) आदि.*

शोध सार

राजस्थान का दक्षिणांचल क्षैत्र वाग्वर (वागड) प्रदेश जो पौराणिक पुण्य स्थली रहा है। यह क्षैत्र अति प्राचीनकाल से धर्म क्षैत्र रहा है। वागड प्रदेश के इस क्षैत्र में विविध देवी–देवताओं के प्रसिद्ध पुरातन असंख्य मंदिर है जो निर्माण कला शिल्प और अपनी भव्यता के लिए प्रदेश में ही नही अपितु पुरे भारत वर्ष में प्रसिद्धि प्राप्त है। यही बांसवाडा जिला मुख्यालय से 20 किमी दुर तलवाडा नगर के समीप उमराई गॉव में ''जगजननी'' त्रिपुरा सुन्दरी माताजी का भव्य मंदिर है। यह स्थल प्रमुख शक्तिपीठों में सें एक है।

प्रस्तावना

राजस्थान के सुदुर दक्षिण में स्थित डुँगरपुर बांसवाडा का क्षैत्र जिसे वागड के नाम से जाना जाता है। यह क्षैत्र अरावली की उपत्यकाओं से घिरा हुआ है जो नदियों जलाशयों एवं प्रकृति की सुरम्यवादियों से आच्छादित हैं। वागड के क्षैत्र बांसवाडा को लघु काशी भी कहा जाता है। इस प्रदेश को स्कन्दपुराण में 'गुप्त प्रदेश' राजा भोज के समय के शिलालेखों में 'स्थली मण्डल' तथा पुराणों में 'कुमारिका खण्ड' व 'वागुरी क्षैत्र' के नाम उदधृत है।

इस क्षेत्र में प्रवाहित अजस्त्र सलीला 'माही' को पुराणों में 'कलियुगे माही गंगा' की संज्ञा दी गई है। देवर्षियो ने इस मातृका प्रदेश के त्रिवेणी संगम बैणेश्वर तीर्थ के दिव्य सौन्दर्य के उल्लेख के साथ इसमें स्नान करने को अति महिमामय माना है। ऐसी पावन माही नदी के क्षैत्र में पुरा महत्व के अनेक मन्दिरों में तलवाडा नगर 2 किमी दुर स्थित सघन वन क्षैत्र से आच्छादित ''भगवती त्रिपूरा सुन्दरी'' का भव्य मंदिर स्थित है यह स्थल प्रमुख शक्ति पीठों में से एक है।

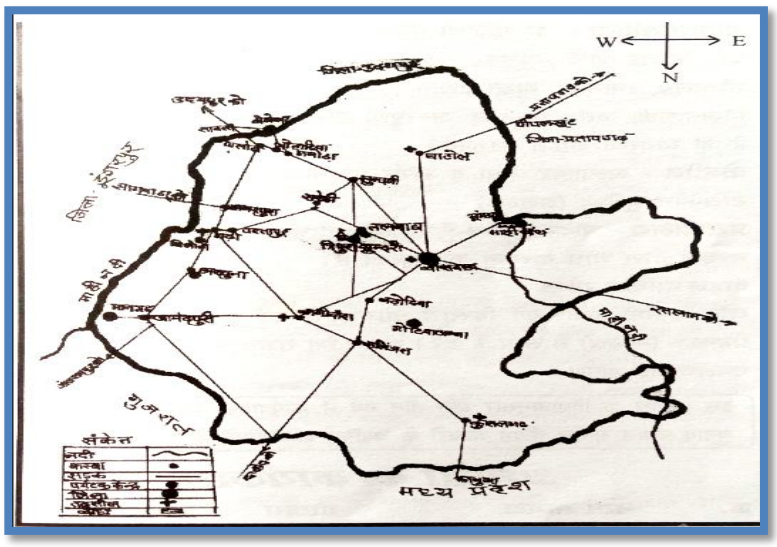

त्रिपुरा सुन्दरी मन्दिर

भारतवर्ष में पराम्बा के अनेक ऐसे सिद्धपीठ एवं मंदिर है जिनकी आधारशीला शाक्त दर्शन एवं तन्त्र साधना पर अवलम्बित है। राजस्थान के बॉसवाडा जिले का ऐतिहासिक भगवती त्रिपुरा सुन्दरी मन्दिर भी उनमें से एक है। यह माताजी का प्रसिद्ध मंदिर है। जहॉ प्राचीन और अर्वाचीन कला का संगम हुआ है। उमराई गॉव के सघन वन में आच्छादित देवी का यह मंदिर वागड की पहचान बन चुका है। देवी को श्रृद्धालु त्रिपूरेा सुन्दरी,'''तरतई माता'' एवं त्रिपूरा महालक्ष्मी के नाम से भी सम्बोधित करते है। इस मंदिर की गिनती प्राचीन शक्तिपीठों में होती है।

त्रिपुरा सुंदरी मंदिर की स्थापना एवं विकास का इतिहास

त्रिपुरा सुन्दरी के इस मंदिर की स्थापना कब हुई है, इसका स्पष्ट उल्लेख या ऐतिहासिक प्रमाण तो नही मिलता है, परन्तु मंदिर के उत्तर में कनिष्क के समय का एक शिवलिंग आज भी विधमान है। ऐसे शिवलिंग नीलकंठ महादेव के मंदिर (विट्ठल देव) तथा अन्य शिव मंदिरो में भी विधमान है। इससे पता चलता है कि त्रिपुरा सुन्दरी का यह शक्तिपीठ कनिष्ठ के पूर्व का बना हुआ होगा।

मंदिर परिक्षैत्र में वि.स.1540 ई. एक शिलालेख भी स्थित है जो प्राचीन होने के कारण सुपाठ्य नही है लेकिन इस शिलालेख के अनुसार जिस स्थान पर मंदिर है उसके आस–पास कोई नगर था। जिसका नाम गढपोली था। गढपोली को दुर्गापुर कहते है। इस नगर का शासक 'नृसिंह शाह' था। ऐतिहासिक प्रमाणो में ई.सन् 1133 वि.संवत 1190 में गुजरात के शासक सिद्धराज जंयसिहं सोलंकी के मालवा नरेश नरवर्मा पर आक्रमण के प्रमाण मिले है हो सकता है ''नृसिंह शाह'' नरवर्मा की ही उपाधी हो क्योकी मालवा के शासक त्रिपुरा सुन्दरी के उपासक भी बताये जाते है। इस शिलालेख में ''त्रिउरारी'' शब्द का उल्लेख है। इसी आधार पर तीन दुर्ग–सीतापुरी, शिवपुरी और विष्णुपुरी थे। इन तीन दुर्गो के बीच देवी मॉ का मन्दिर स्थित होने से इसे ''त्रिपुर सुन्दरी'' कहा जाता है। कालान्तर में अपभ्रंश हो कर यह ''त्रिपुरा सुन्दरी''हो गया।

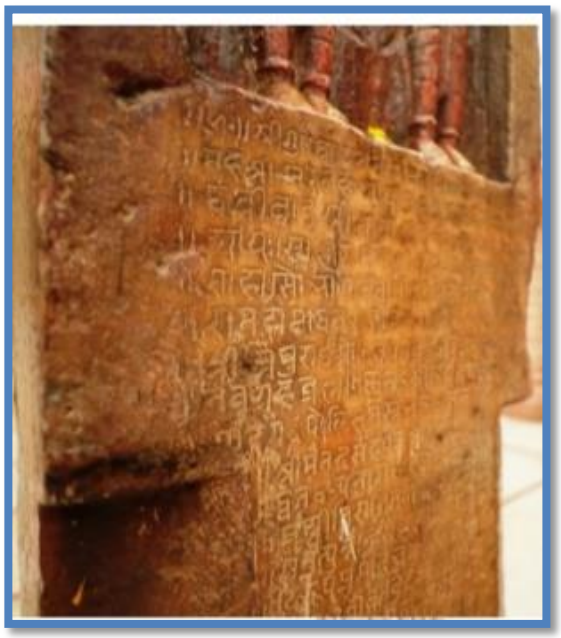

त्रिपुरा सुंदरी के उपासक राजवंश

रियासत काल में बांसवाडा, डूंगरपुर, गुजरात, मालवा प्रदेश और मारवाड़ के राजा महाराजा भी माँ त्रिपुरा सुन्दरी के उपासक थे । मालवा के राजाओं के समय में ''त्रिपुरा सुन्दरी'' की पूजा की विशेष व्यवस्था थी। यहाँ शाक्त, विष्णु प्रिया के यज्ञ भी होते रहते थे। गुजरात, मालवा एवं मारवाड़ के राजा माँ त्रिपुरा सुन्दरी के भक्त थे। गुजरात के सोलंकी सम्राट सिद्धराज जयसिंह की यह ईष्ट देवी थी। सिद्धराज उपासना के लिए भी यहाँ आया करते थे। 11वीं 12 शताब्दी में जब मालवा पर चढ़ाई की थी तब भी सिद्धराज त्रिपुरा सुन्दरी की उपासना के बाद ही आगे बढ़ा था। मालवा के महाराजा विक्रमादित्य भी त्रिपुरा सुन्दरी के उपासक थे। जोधपुर के राजवंश ने इस बात की पुष्टि की हैं कि मारवाड़ के शासक और रानियाँ यहाँ आते थे, माता का पूजन करते थे और गरबा नृत्य भी करते थे।

मंदिर का जीणोद्धार एवं विकास

प्राचीन खण्डहरों के आधार पर अनुमान लगाया गया है कि मुस्लिम आक्रांताओं एवं मूर्तिभंजक महमूद गजनवी या अलाउद्दीन खिलजी ने इस क्षेत्र के मंदिरों को नष्ट–भ्रष्ट किया होगा चुंकि इन शासकों को गुजरात पहुँचने का मार्ग मालवा होते हुए ही था। अतः उन्होने मार्ग में इन मन्दिरों को तोडा होगा। किन्तु भक्तों ने माँ की मूर्ति को उनके आक्रमण से बचा लिया।

1968 से पूर्व मंदिर का स्वरूप

प्राचीन समय में इस क्षेत्र के चांदा भाई उर्फ पाता भाई लुहार ने माँ त्रिपुरा सुन्दरी के मंदिर का जीर्णोद्वार करवाया था। विक्रम संवत 1930 में पंचाल समाज चौदह चौखला ने मंदिर पर नया शिखर प्रतिष्ठित किया एवं पुनः विक्रम संवत 1991 में मंदिर का जीर्णोद्वार कार्य एवं शिखर प्रतिष्ठित किया।

ईस्वी सन् 1977 में राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री हरिदेव जोशी की प्रेरणा से दान–दाताओं के सहयोग से जीर्णोद्वार कार्य करवाया और मंदिर भव्य रुप में प्रतिस्थापित किया। रियासत काल से ही माँ भगवती त्रिपुरा सुन्दरी मंदिर की सेवा–पूजा, विकास, रख–रखाव पंचाल समाज चौदह चौखला करता आ रहा हैं। माँ त्रिपुरा सुन्दरी पंचालों की कुलदेवी हैं। जीर्णोद्वार में मंदिर की प्राचीन स्थापत्यकला को अक्षुण्ण रखा गया हैं। मंदिर में खंडित मूर्तियों का संग्रहालय भी बना हुआ है जिनकी शिल्पकला अद्वितीय हैं।

मंदिर का वर्तमान स्वरूप

मूर्ति

माता की मूर्ति काले पाषाण की है कि लेकिन पृष्ठभूमि में काले रंग के काष्ठ को काम में लिया गया है। लेकिन समय के साथ यह काष्ठ भी पाषाण जैसे कठोर बन गया। सिंहवाहिनी माँ भगवती त्रिपुरा सुन्दरी की मूर्ति अष्टादश भूजाओं वाली हैं। पाँच फीट ऊँची विशाल मूर्ति में माँ के अष्टादश भुजाओं में विविध आयुध है। पार्श्व में नव दुर्गाओं की प्रतिकृतियाँ अंकित हैं। मूर्ति के चरणों में ''श्री यंत्र''

निर्मित है जिसे सर्वसिद्धि प्रदान करने वाला यंत्र माना जाता हैं। माता की मूर्ति की पृष्ठभूमि में भैरव, देव–दानव संग्राम और देवी के शस्त्राशस्त्र अंकित हैं। स्वयं देवी सिंहवाहिनी होते हुए भी सिंह की पीठ पर रखे हुए कमल पर विराजमान हैं। इस प्रकार आधार में कमल और एक तांत्रिक यंत्र है।

मंदिर में अन्य विग्रह

प्रत्येक मंदिर में प्रायः शिवलिंग, गणेश जी, हनुमान जी व भैरुजी आदि के विग्रह होते है, जिनका इतिवृत सभी को ज्ञात है। ''त्रिपुरा सुन्दरी'' मंदिर में भी ऐसे विग्रह देखने को मिलते है –प्राचीन काल में इस मंदिर के दक्षिण में एक छोटा सा मंदिर था जिसमें कालिका की प्रतिमा थी। मंदिर के उत्तर भाग की और अष्टभुजा सरस्वती की प्रतिमा थी। सहस्त्र चण्डी के समय ये मंदिर नष्ट हो चुके थे उनके अवशेष आज भी विद्यमान है। माँ भगवती के मंदिर के पृष्ठ भाग में ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश की मूर्तियां थी यह दुर्गा सप्तशती के प्रमाण के आधार पर थी जिसमे कहा गया है – ''पृष्ठतो मिथुन चयम''वर्तमान में मंदिर के पीछे भाग में नीलकंठ महादेव मंदिर तथा मंदिर के अग्रभाग में मुख्य प्रवेश द्वार के समीप ''हनुमान मंदिर'' अवस्थित है।

मंदिर परिसर में स्थित हनुमान मंदिर

मंदिर परिसर में स्थित निलकण्ठ महादेव मंदिर

शक्ति पीठ के रुप में

माँ त्रिपुरा सुन्दरी के इस स्थान को पीठ स्थान भी कहा जाता है। ई. स. 1982 के कल्याण के 61वे अंक में भी लिखा गया था कि बाँसवाडा में माता का पीठ स्थान है। दक्ष के यज्ञ में सती अग्निकुण्ड में प्रवेश कर गई थी। भगवान शिव ने क्रोध में आकर दक्ष का सिर काट लिया था और सती के शव को कंधे पर रख कर सती के शोक में इधर–उधर घुम रहे थे। भगवान विष्णु ने सोचा कि यदि शिव की यही स्थिति रही तो संसार का क्या होगा? उन्होने सुदर्शन चक्र को शव को छिन्न–भिन्न करने की आज्ञा दी। इस पर सुदर्शन चक्र ने शव के टुकडे करने आरम्भ किये। ये 51 टुकडे भारत के भिन्न–भिन्न स्थानों पर गिरे वहाँ शक्ति पीठ का स्थान बना। त्रिपुरा सुन्दरी मंदिर के स्थान सती का मस्तक गिरा था। वही पीठ स्थान माँ त्रिपुरा सुन्दरी का स्थान है।

निष्कर्ष

वागड़ का ''त्रिपुरा सुन्दरी मंदिर'' प्रकृति की गोद में बसा हुआ है। चारो तरफ सघन वनों से आच्छादित यह क्षेत्र मनहर प्रतीत होता है। यह मंदिर प्राचीन रियासत काल से ही राजाओं का आराध्य रहा है और वर्तमान में भीसत्ता प्राप्त करने का प्रमुख केन्द्र रहा है। वर्तमान में कई राजनेता वसुन्धरा राजे, अशोक गहलोत, अटल बिहारी वाजपेयी सत्ता प्राप्ति हेतु माता का आशीष प्राप्त करने आते है।यह शक्तिपीठ राजस्थान, गुजरात एवं मध्यप्रदेश के प्रमुख तीर्थ के रूप में उभर रहा है। इस मंदिर की भव्यता लोगो को आकर्षित करती है। वही मंदिर में माता की मुर्ति बहुत सुंदर है। मूर्ति में नखशिख जिस कुशलता से अंकित किये गये है उसकी प्रशंसा के लिए शब्द अपर्याप्त है। ऐसा लगता है कि यह किसी भक्त शिल्पकार का कार्य है जिसने माता के ध्यान में मग्न हो कर, मॉ की इस मुर्ति को पत्थर पर प्रतिष्ठित करते समय इसमें प्राण फुँक कर जीवन डाल दिया हो। प्रकति और देवी के सुन्दर आकर्षण के

दर्शनार्थ मंदिर में प्रतिदिन दर्शनार्थियो का ताता लगा रहता है। प्रति वर्ष नवरात्रि में यहॉ भारी मेला लगता है, जिसमें हजारो श्रद्धालु आकर देवी के दर्शन करते है। शक्ति के उपासकों के लिये यह प्रमुख तीर्थस्थल है।

संदर्भ ग्रंथ

1. मोहनलाल गुप्ता, उदयपुर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, पांचवा संस्करण, 2011, पृ.सं. 143
2. त्रिपुरा सुंदरी दर्शनिका, पृ.सं.9
3. बनवारी लाल कांछल, 108 दिव्य शक्ति पीठपृ.सं 148
4. त्रिपुरा सुन्दरी मंदिर परिचायिका, पृ.सं. 4
5. राजेश कुमार व्यास, सांस्कृतिक पर्यटन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, द्वितीय संस्करण, 2011 पृ.सं.74
6. कमलेश माथुर, पारम्परिक कला एवं लोक संस्कृति, साहित्यागार, जयपुर, 2010, पृ.सं. 83
7. मंदिर परिसर में लगा साईन बोर्ड एवं स्वयं द्वारा सर्वेक्षण दिनांक 22.12.2022
8. राजेश जोशी, भगवती त्रिपुरा सुंदरी साधना एवं स्त्रोत, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर, 2016पृ.सं 71,72
9. गौरी शंकर हीराचन्द ओझा, बांसवाडा राज्य का इतिहास, राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर, 1998
10. गौरी शंकर हीराचन्द ओझा, डूंगरपुर राज्य का इतिहास, राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर, 2000
11. जयसिंह नीरज, भगवती लाल शर्मा, राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा, पृ.सं. 50
12. साक्षात्कार, पंडित निकुंज मोहन पण्ड्या, मुख्य पुजारी मंदिर दिनांक 22.12.2022

Corresponding Author

*** वासुदेव बलाई,** *शोधार्थी इतिहास विभाग*
मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय,उदयपुर
डॉ चन्द्रशेखर शर्मा, *आचार्य*
राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय उदयपुर
Email-vasudevjambura09@gmail.com, Mobile- 9413294838